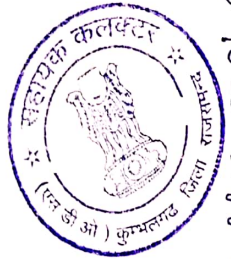


24/12/2020

पत्रावली पेश हुई। आदिवासी पत्रावली (उपस्थित) हो वह पत्र सतत सिच एवं पत्रावली (उपस्थित) के अन्तर्गत सिच (उपस्थित) आदिवासी बादी ने उपस्थित-पत्र में अतिरिक्त तथ्यों को दोहराते हुए अतीव बहस में बताया कि उक्त गाँवको तटस्थता गणको की आशय नम्बर 2381 क्रमांक 1-05-10 वीं प्राप्ति प्राप्ति एवं उसके आर्थिक मोहन व बड़ीगाँव के नाम पर राजस्व रोकने से नहीं है जितने कोट बना हुआ है विपक्षीय प्राप्ति के हिस्से की इस विषय प्राप्ति पर जवाब कब्जा कर रहे हैं व प्राप्ति की प्राप्ति को सुनिश्चित कर निर्माण कार्य करने की तत्पर है मना करने पर नही मना लड़ाई लगाया करने पर कामकाज है जिसके द्वारा स्वयंसेवक निर्देशालय को वाद पेश कर रहा है जिसके निष्काण में समझ लक्षण। तक तक उक्त वादग्रस्त प्राप्ति पर विपक्षीय के विरुद्ध इस आशय से आस्था निर्देशालय जारी की जावे की प्राप्ति के उपयोग उपयोग में दखलनाही नहीं रहे, प्राप्ति सुनिश्चित नहीं रहे, निर्माण नहीं रहे। आदिवासी विपक्षीय काग प्राप्ति जवाब में अतिरिक्त तथ्यों को दोहराते हुए अतीव बहस में बताया कि उक्त वादग्रस्त प्राप्ति में



॥ विषय (गणतंत्र विषय) प्राप्ति प्राप्ति के प्राप्ति प्राप्ति धना प्रित तुलना लोहार में 80/- रुपये में मोती प्रित प्रित प्रित तुलना की विविध स्टाम्प पर विषय कर कब्जा सिद्ध किया है उक्त बेची गई प्राप्ति पर सन् 1962 के पत्रावली से आज तक तब प्राप्ति का इस प्राप्ति व कब्जा नहीं रहा। व 58 वर्षों से उक्त प्राप्ति सुनिश्चित प्राप्ति व परिवार का कब्जा लक्षण निर्दिष्ट शांतिपूर्ण

सहायक कलेक्टर
(एस.डी.ओ.) कुम्भलगढ़
जिला-राजसमन्द

न्यायालय उपखण्ड अधिकारी, कुम्भलगढ़ जिला-राजसमन्द

क्रमांक 32 सन 2020 किस्म मुकदमा जारि पत्र

गिरि रक्षाली बनाम राज्यपाल व गिरि

आदेशिका	हस्ताक्षर/सूचना
<p>अधिसूचनापूर्वक न्याया आ रहा है। प्रार्थी का उक्त वाद प्रस्तुत दृष्टि पर कब्जा नहीं है। प्रार्थी के मन में बेइतमी जन्मे है यह मित्रों वाद का प्रार्थन पत्र जेश जिए गया है। प्रार्थी द्वारा अपने शक्ति को भी प्रकाश करी बताया है। अतः जो प्रवेश जो इंजेशन के सिद्धांत पर प्रार्थी का प्रार्थन पत्र सव्यप निरस्त जिया जावे व सिपदी को प्रार्थी से प्रतिशतमक रनच्य दिलाया जावे।</p> <p>बहस पर मन्त्र एवं पत्रावली के अन्तर्गत से रिड है कि वाद का विनिश्चयन साक्ष्य रखते के अन्तर्गत पर होगा तब तक वाद की बहुलता न बदे इस हेतु फायदा निवेदान जारी की जात न्यायोचित प्रतीत होती है।</p> <p>अतः उक्त वाद प्रस्तुत दृष्टि पर मूल वाद के निस्तारण तक इस आशय की अधिसूचना निवेदान जारी की जाती है कि उक्त पक्ष को ही प्रधान्यीति अन्तर्गत रहे। एवं निर्माण कार्य नहीं करे। पत्रावली फंडल शुकात है पर नाबर से शक हो। निर्णय सुनने न्यायालय में सुनाया गया।</p>	



सहायक कलेक्टर
(एस.डी.ओ.) कुम्भलगढ़
जिला-राजसमन्द